O.P. JINDAL GLOBAL
INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE
UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S.
OFFICE of
INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ Volume II Issue IV

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए **प्राची हुड्डा** और **त्रिशा भटनागर** को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए वीना हुड्डा के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम सेमिनार में आये सभी स्पीकर्स को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।

हरियाणा के नाम

प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं ।

“प्रगतिशील” विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः “तुम हरियाणवी नहीं लगते” या “तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते” जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक “हरियाणा की आवाज़” इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम II, अंक IV

हरियाणा दिवस स्पेशल: हरियाणा में भूमि, श्रम और व्यक्तिगत परिचय का बदलता स्वरुप

1 नवंबर, हरियाणा दिवस के अवसर पर हरियाणा की आवाज़ ने राज्य में भूमि, श्रम और व्यक्तिगत परिचय के बदलते स्वरुप पर चर्चा का आयोजन किया। इस चर्चा का मकसद हरियाणा में चल रहे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक बदलावों पर गहराई से बात करना था। इसमें ज़मीन के मालिकाना हक और खेती-बाड़ी के ढांचे में तेज़ी से हो रहे बदलाव, पलायन, असमानता, जाति और लिंग संबंधों, और ग्रामीण युवाओं के बीच बदलती पहचान जैसे अहम मुद्दों पर बात की गई।

सेशन की शुरुआत IDEAS के डीन प्रो. दीपांशु मोहन के वेलकम एड्रेस से हुई। यद्यपि सामान्य तौर पर सर्वेक्षण में विकास दिखने को मिलता है, फिर भी असमानता, बेरोज़गारी और जनसांख्यिकीय बदलावों के रूप में प्रकट होने वाली संरचनात्मक जटिलताएं लगातार गहरी होती जा रही है। दिल्ली–एनसीआर के तीव्र विस्तार के कारण हरियाणा का प्राथमिक क्षेत्र असंतुलित रूप से विकसित हुआ है, जिसने भूमि उपयोग के स्वरूप और रोज़गार के अवसरों में महत्वपूर्ण परिवर्तन ला दिए हैं।

ये चर्चाएँ एक व्यापक संस्थागत बातचीत की शुरुआत थीं, जिसका मकसद आस-पास के गाँवों में लगातार, ज़मीनी जुड़ाव और रिसर्च को बढ़ावा देना था। प्रो. प्राची हुड्डा (IDEAS, JGU) द्वारा मॉडरेट किए गए इस सेशन में प्रो. विकास रावल का कीनोट एड्रेस हुआ, जिसके बाद डॉ. सतेंद्र कुमार (CSH, नई दिल्ली और यूनिवर्सिटी ऑफ़ ज़्यूरिख), डॉ. सुधीर कुमार सुथार (JNU), और डॉ. प्राची बंसल (JGU) के साथ एक पैनल चर्चा हुई, और इसका समापन सोनीपत ज़िले के गाँवों के किसानों के साथ व्यापक स्तर पर बातचीत के साथ हुआ। हरियाणा की आवाज़ का यह अंक इस सेशन की एक संक्षिप्त रिपोर्ट है, जिसमें कार्यक्रम के दौरान सामने आए मुख्य तर्कों, चर्चाओं और विचारों को शामिल किया गया है।

प्रो. रावल का वक्तव्य

प्रो. रावल ने अपने संबोधन में हरियाणा की उस आंतरिक विविधता पर ध्यान केंद्रित किया, जिसे अक्सर राज्य के छोटे भौगोलिक आकार के कारण नज़रअंदाज़ कर दिया जाता है। उन्होंने स्पष्ट किया कि हरियाणा के अलग-अलग क्षेत्रों में जाति संरचना, भूमि स्वामित्व के पैटर्न, फसल प्रणालियाँ, श्रम और बाज़ार से जुड़ाव में गहरे अंतर पाए जाते हैं। इस बहुस्तरीय विविधता (इंटरसेक्शनैलिटी) के चलते उन्होंने एकरूप सुधारों के बजाय क्षेत्र-विशिष्ट नीतिगत हस्तक्षेपों की आवश्यकता पर ज़ोर दिया।

कृषि परिवर्तन पर बोलते हुए प्रो. रावल ने हरित क्रांति की घटती गति की ओर ध्यान दिलाया। बढ़ती लागत, गेहूं, धान, कपास और सरसों जैसी प्रमुख फसलों की स्थिर पैदावार और किसानों की आय में अनुपातिक वृद्धि के अभाव ने इसकी लाभप्रदता को कम कर दिया है। मशीनीकरण के कारण कृषि में मज़दूरी के अवसर न्यूनतम हो गए हैं, जिससे भूमि और आय में असमानता और गहरी हुई है। इसके समानांतर, आँकड़े बताते हैं कि ग्रामीण परिवारों का 28–30 प्रतिशत भूमिहीन है, जबकि लगभग 75 प्रतिशत दलित परिवारों के पास कोई भूमि नहीं है। शीर्ष 20 प्रतिशत भूमिधर हरियाणा की 70 प्रतिशत से अधिक कृषि भूमि पर नियंत्रण रखते हैं, जो गहरी आर्थिक असमानता को उजागर करता है।

भूमि की असमानता ही जातिगत सत्ता, ग्रामीण पदानुक्रम और सामाजिक–राजनीतिक संबंधों की आधारशिला है। उन्होंने अत्यधिक पूंजीकरण की ओर भी संकेत किया—जहाँ ट्रैक्टर, कंबाइन हार्वेस्टर और लेज़र लेवलर भूमि के आकार की वास्तविक आवश्यकता से कहीं अधिक हो गए हैं। यह पूंजी श्रम को अदृश्य कर देती है, लेकिन विस्थापित मज़दूरों के लिए कोई वैकल्पिक रोज़गार नहीं पैदा करती। इसके परिणामस्वरूप अल्प-रोज़गार, पलायन पर निर्भरता, मज़दूरों की सौदेबाज़ी क्षमता में कमी और महिलाओं की मज़दूरी का लगभग पतन देखने को मिला है।

मशीनीकरण के शुरुआती दौर में महिलाओं का विस्थापन सबसे पहले हुआ। निराई, रोपाई और कटाई जैसे उनके पारंपरिक कार्य मशीनों से प्रतिस्थापित कर दिए गए। इसके बावजूद पशुपालन और घरेलू खेती में महिलाओं का अवैतनिक श्रम आज भी अदृश्य बना हुआ है। कर्ज़ से बंधे मज़दूरों द्वारा शोषणकारी शर्तों को स्वीकार करने वाले 'अमुक्त श्रम' (Unfree Labour) के रूप आज भी मौजूद हैं।

उन्होंने यह भी बताया कि खेती करने वाले परिवारों की युवा पीढ़ी अब खेती से अपरिचित होती जा रही है, लेकिन गैर-कृषि रोज़गार के अवसर सीमित और कम मज़दूरी वाले हैं। जाति-आधारित श्रम बाज़ार पहले से ही महंगी गतिशीलता को और सीमित कर देते हैं। इससे युवाओं में अवसरों के बिना आकांक्षाएँ पैदा होती हैं। अंततः उन्होंने हरियाणा में ऑनर किलिंग, खाप राजनीति और लैंगिक दमन जैसी जातिगत हिंसा को कृषि सामाजिक संरचना से जुड़ा हुआ बताया—इन्हें उससे अलग नहीं देखा जा सकता।

भूमि पुनर्वितरण, श्रम संरक्षण और जाति-संवेदनशील नीति-निर्माण ही असमानताओं को दूर कर सकते हैं।

डॉ. सतेन्द्र कुमार का वक्तव्य

डॉ. सतेन्द्र कुमार का वक्तव्य दो आपस में जुड़ी हुई चिंताओं पर केंद्रित था—पहली, जाटों और पिछड़ी जातियों के बीच बदलती युवा आकांक्षाएँ किस प्रकार पारंपरिक कृषि पदानुक्रम को अस्थिर कर रही हैं; और दूसरी, ग्रामीण हरियाणा में उभरती नई धार्मिकता किस तरह जाति पहचान और राजनीतिक संरेखण को नए रूप दे रही है।

उन्होंने कहा कि नवउदारवादी सुधारों ने अवसरों का वादा तो किया, लेकिन हरियाणा में बहुत कम सुरक्षित और सम्मानजनक नौकरियाँ पैदा कीं। औद्योगीकरण और सेवा क्षेत्र का विस्तार सीमित रहा, जिससे शिक्षित और अर्ध-प्रशिक्षित ग्रामीण युवाओं के लिए भी रोज़गार के रास्ते बंद हो गए। उन्होंने भी इसे "अवसरों के बिना आकांक्षा" की स्थिति बताया। पढ़े-लिखे युवा विदेश जाने का सपना देखते हैं, लेकिन वीज़ा प्रतिबंध और स्थानीय स्तर पर अस्थिर रोज़गार उनके लिए और अधिक जटिलता उत्पन्न करता है।

धर्म और शहरीकरण पर बोलते हुए डॉ. कुमार ने कहा कि क्षेत्रीय धार्मिक माप दंड बदल रहा है। उच्च वर्गीय जातियों के मूल्यों से प्रभावित शहरी संस्कृति का ग्रामीण समाज द्वारा भी अनुकरण किया जा रहा है।

डॉ. सुधीर कुमार सुथर का वक्तव्य

डॉ. सुधीर कुमार सुथर ने हरियाणा की ग्रामीण अर्थव्यवस्था और राजनीति में हो रहे बदलावों को आइडेंटिटी क्राइसिस के संदर्भ में विश्लेषित किया। उन्होंने बताया कि कृषि संकट केवल आर्थिक नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, प्रतिष्ठा और पुरुषत्व की अवधारणाओं को भी प्रभावित कर रहा है, जिसका असर सामूहिक एकजुटता पर पड़ता है।

किसान आत्महत्याओं के संदर्भ में उन्होंने कहा कि हरियाणा में दर अपेक्षाकृत कम है, लेकिन यह कृषि की समृद्धि का प्रमाण नहीं है। इसके पीछे गहरे सामाजिक संबंध, जातिगत नेटवर्क, भूमि से जुड़ी पहचान और सामुदायिक एकता है। ग्रामीण भारत को केवल शोषण के रूप में देखना अधूरा दृष्टिकोण है। गरिमा, गर्व, आकांक्षा और आत्मनिर्णय को भी समझना होगा।

किसान आंदोलन को उन्होंने किसानों की गहरी असुरक्षाओं—आर्थिक ठहराव, सामाजिक वर्चस्व की हानि और नीतिगत बदलावों—की अभिव्यक्ति बताया। उन्होंने यह भी कहा कि हरियाणा में पुरुषत्व एकरूप नहीं है। विभिन्न जातियों में अलग-अलग पुरुषत्व की अवधारणाएँ मौजूद हैं। मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति से प्रभावित 'आकांक्षात्मक पुरुषत्व' युवाओं में फैल रहा है।

नशे की समस्या को एक "मौन संकट" बताया, जिस पर पर्याप्त डेटा नहीं है। शहरीकरण सीमित अवसर देता है, और डिग्रियाँ भी स्थायी रोज़गार की गारंटी नहीं बन पातीं।

डॉ. प्राची बंसल का वक्तव्य

डॉ. प्राची बंसल ने हरियाणा के कई जिलों के विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर हरियाणा की कृषि में श्रम, जाति और लैंगिक असमानताओं का विश्लेषण प्रस्तुत किया। आर्थिक बदलावों के बावजूद जाति-आधारित पेशागत संरचनाएँ लगभग अपरिवर्तित बनी हुई हैं। दलितों को गैर-पारंपरिक पेशों में सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है—ऋण भेदभाव, प्रशासनिक अड़चनें और सामाजिक वैमनस्य। भूमि पट्टे पर भी उन्हें अत्यंत असमान शर्तों पर काम करना पड़ता है।

उन्होंने बताया कि महिलाएँ कृषि और पशुपालन का 80–85% श्रम करती हैं, लेकिन यह श्रम अवैतनिक और अदृश्य है। मशीनीकरण ने महिलाओं के काम को सबसे ज़्यादा प्रभावित किया है। पुरुषों को डेली वेज मिलती है, जबकि महिलाओं को पीस रेट भुगतान।

हरियाणा और पंजाब में मशीनीकरण की दर बहुत अधिक है, जिससे श्रम अवशोषण घटा है। नवउदारवादी नीतियों ने अस्थिर और असंगठित रोज़गार बढ़ाया है। NSS जैसे सर्वेक्षण महिलाओं के काम को गलत वर्गीकृत करते हैं, जिससे 85% महिलाएँ "बेरोज़गार" दर्ज हो जाती हैं।

सिरि जैसे शोषणकारी अनुबंध आज भी मौजूद हैं, जिनमें महिलाएँ और प्रवासी मज़दूर फँसते हैं। शिक्षा और रोज़गार के बीच बढ़ती खाई, शहरी काम की सामाजिक अवमानना और पहचान की चिंता ग्रामीण युवाओं को असमंजस में डाल रही है।

किसानों के साथ जमीनी संवाद

पैनल चर्चा के बाद स्थानीय किसानों के साथ एक खुला संवाद आयोजित किया गया। कई किसानों ने भाग लिया, लेकिन तीन किसानों—रिंकू जी (माजरा), दिनेश जी (मनोली) और बृजेश (गुना फरमाना)—ने चर्चा को विशेष दिशा दी।

रिंकू जी ने इस पहल के लिए विश्वविद्यालय का आभार व्यक्त किया। वे 80–100 एकड़ की पारिवारिक भूमि पर खेती करने वाले परंपरागत किसान हैं। उन्होंने मशीनीकरण से पैदा हुई चिंता साझा की—उनके पारंपरिक कौशल अब अप्रासंगिक होते जा रहे हैं। उन्होंने भविष्य को लेकर अनिश्चितता जताई, लेकिन खेती को सांस्कृतिक विरासत के रूप में बनाए रखने की इच्छा भी प्रकट की।

दिनेश जी पॉलीहाउस खेती करते हैं और इसे शोध-आधारित उद्यम मानते हैं। वे विशेष फसलों की खेती करते हैं और बाज़ार की माँग को समझना अनिवार्य मानते हैं। उन्होंने पश्चिमी तकनीकों की अंधी नकल की आलोचना की और बताया कि आयातित मशीनें स्थानीय परिस्थितियों में अक्सर विफल हो जाती हैं। "एग्रीप्रेन्योरशिप" की अवधारणा पर ज़ोर देते हुए उन्होंने ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म के ज़रिये बिक्री की संभावनाओं की बात की।

उच्च शिक्षा प्राप्त युवा किसान बृजेश ने खेती को "पीढ़ीगत उपहार" बताया। जल संकट ने उन्हें खेती में सक्रिय भूमिका निभाने को मजबूर किया। उन्होंने कहा कि युवाओं को आकर्षित करने के लिए कम-जोखिम वाले मॉडल ज़रूरी हैं। उन्होंने किसान पहचान के विरोधाभास पर भी बात की—विश्वविद्यालयों में गर्व, लेकिन विवाह में भूमि अनिवार्य। अंत में उन्होंने कहा कि सरकारी संसाधनों पर बड़े किसानों का कब्ज़ा है, जबकि छोटे किसान बाज़ार में शोषण झेलते हैं।

टीम, हरियाणा की आवाज़

प्राची हुड्डा
लीड
हरियाणा की आवाज़

त्रिशा भटनागर
स्टूडेंट वालंटियर

JGU *at a* GLANCE

16000+ Students — FEMALE 51% | MALE 49% | UNDERGRADUATE 80% | MASTERS/DOCTORAL 20%

1100+ Faculty — FEMALE 56% | MALE 44%

35 Average age of Faculty Members

45% Faculty Members are Alumni of the top **200** Global Universities

4000+ Faculty & Administrative Staff from **50** countries

15000+ Alumni Network World-Wide

28 Indian States & Union Territories represented by Students

12 SCHOOLS

50+ Programmes

30+ Undergraduate Programmes
20+ Postgraduate Programmes
Doctoral Programme

- Jindal Global Law School — *India's First Global Law School*
- JINDAL GLOBAL BUSINESS SCHOOL — INDIA'S FIRST MULTI-DISCIPLINARY GLOBAL BUSINESS SCHOOL
- Jindal School of International Affairs — *India's First Global Policy School*
- Jindal School of Government and Public Policy — *India's First Public Policy School*
- Jindal School of Liberal Arts & Humanities — *India's First Transnational Humanities School*
- Jindal School of Journalism & Communication — *India's First Global Media School*
- Jindal School of Design & Architecture — India's Global Design and Architecture School
- JINDAL SCHOOL OF BANKING & FINANCE — India's First Global Finance School
- JINDAL SCHOOL OF ENVIRONMENT & SUSTAINABILITY — India's First Interdisciplinary Environment & Sustainability School
- Jindal School of Psychology & Counselling — India's First Transdisciplinary Psychology School
- JINDAL SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE — India's Global School of Language & Literature Studies
- JINDAL SCHOOL OF PUBLIC HEALTH & HUMAN DEVELOPMENT — India's first Interdisciplinary School for Public Health & Development

RESEARCH

8500+ Publications

65+ Interdisciplinary research centres

6 Research & capacity building institutes

- JILDEE — JINDAL INSTITUTE OF LEADERSHIP DEVELOPMENT AND EXECUTIVE EDUCATION
- JINDAL INSTITUTE OF BEHAVIOURAL SCIENCES
- IIHEd — INTERNATIONAL INSTITUTE FOR HIGHER EDUCATION RESEARCH & CAPACITY BUILDING — Institution Building for Nation Building — O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY
- Jindal India Institute — PROPELLING THE INDIAN CENTURY — O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY
- JINDAL INSTITUTE OF HARYANA STUDIES
- MJAS — MOTWANI JADEJA INSTITUTE FOR AMERICAN STUDIES AT O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY

INTERNATIONAL COLLABORATIONS

575+ Collaborations with International Universities & Higher Education Institutions

10 Forms of Global Partnerships

80+ Countries & Regions

250+ Faculty & Student Exchange Collaborations

100+ Countries represented by Students

RANKINGS & RECOGNITIONS

- RANKED NO.1 IN INDIA — LAW & LEGAL STUDIES
- RANKED NO.1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — ARTS & HUMANITIES
- RANKED NO.1 PRIVATE UNIVERSITY IN INDIA — POLITICS & INTERNATIONAL STUDIES

QS WORLD UNIVERSITY RANKINGS BY SUBJECT 2025

- RANKED NO.1 IN THE WORLD — TIMES HIGHER EDUCATION ONLINE LEARNING RANKINGS 2024
- RANKED AMONG TOP 101-200 SDG 12 & 16 GLOBALLY — TIMES HIGHER EDUCATION IMPACT RANKINGS 2024

THE Times Higher Education

- AMONG 6% B-SCHOOLS GLOBALLY WITH AACSB ACCREDITATION

AACSB ACCREDITED

CONFERRED THE STATUS OF AN

INSTITUTION OF EMINENCE BY THE MINISTRY OF EDUCATION GOVERNMENT OF INDIA